स्त्री विमर्श: हिंदी साहित्य में महिलाओं का चित्रण

निकिता लांबूगोल

सारांश

स्त्री विमर्श एक ऐसा संवाद और बहस है जिसमें स्त्री अपने अधिकारो की मांग करती है | इन अधिकारों के अतंर्गत लिंग के आधार पर समानता, निर्णय, अस्तित्व, अस्मिता, स्वतंत्रता आदि अधिकार आते हैं | कहा जाता है कि किसी भी सभ्य समाज और संस्कृति का सही अनुमान उस समाज में रहने वाली स्त्रीयों की स्थिति से लगाया जा सकता है |

समाज में पुरुषों की तुलना में स्त्रीयों को राजनीतिक, समाजिक और शैक्षिक समानता का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ जिसके परिणाम स्वरुप स्त्रियों द्वारा आंदोलन किया गए और इसे ही नारीवाद या स्त्री विमर्श कहा गया | इसके लिए अंग्रेजी में Feminism शब्द का प्रयोग किया जाता है | सर्वप्रथम यह आंदोलन ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका से प्रारंभ हुआ |

हिंदी कथा साहित्य में विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलती है | हिंदी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री - विमर्श का जन्म माना जाता है महादेवी वर्मा की "श्रृंखला की कड़िया "नारी सशक्तिकरण का सुंदर उदाहरण है |

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप से स्वयं महिला लेखिकाओं ने 1960 ई के आस-पास नारी सशक्तीकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित है | उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती ,मन्नु भंण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन कि अंतर्द्वंद्व एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरु हुआ और आज स्त्री - विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है |

आठवीं दशक तक आते-आते यही विषय एक आंदोलन का रूप ले लिया जो शुरुआती स्त्री विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ | आज मैत्रीयी पुष्पा तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ से आ गयी, जो पितृसत्तात्मक समाज को झकझोर दिया | नारी मुक्ति की गूंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगा |

दूसरे शब्दों में स्त्री के अधिकारों को लेकर कई वर्षों से चली आ रही पुरुषों की दासता के विरोध में स्त्री के अधिकारों को लेकर उठाई गई आवाज को स्त्री विमर्श कहते हैं | परंपराओं से इस समाज व्यवस्था ने पुरुषों को जो छूट प्रदान की है उनमें से कुछ स्त्रियों ने अपने लिए भी वही छूट मंगनी प्रारंभ कर दी जिसमें प्रमुख रूप से लैंगिक समानता भेदभाव न होना और घरेलू हिंसा का विरोध ,यौन उत्पीड़न का विरोध और समान वेतन का अधिकार जैसे अनेक मुद्दे शामिल हैं | स्त्री विमर्श अपने सवालों के कटघरे में पुरुष को नहीं रखती बल्कि समस्त पुरुष व्यवस्था को खड़ा करती है | अतः कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श का स्वरूप पिता सत्ता के इर्द-गिर्द ही खड़ा रहता है |

हिंदी साहित्य में चित्रित स्त्री समस्याए

प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य में स्त्री- विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से माना जाता है | महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना का विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं |उनकी श्रृंखला के कड़िया स्त्री सशक्तीकरण का सुंदर उदाहरण है | जिसमें नारी - जागरण एवं मुक्ति का सवाल उठाया गया है | ऐसा साहित्य जींस में स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण हो शक्ति - विमर्श कहलाता है |

प्रेमचंद से लेकर राजेंद्र यादव तक लेखकों ने नारी समस्या को उकेरा है | लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखने चलाई है | ये नारी के मन में छिपे हुए शक्तियों को पहचाना और नारी की दिशाहीनता , दुविधाग्रस्तता ,कुण्ढाआदि का विश्लेषण किया |

हिंदी पद्य व गद्य में नारी विमर्श :-

समाज के दो पहलू स्त्री - पुरुष एक दूसरे के पूरक है | किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है |उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा | यही पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी- विमर्श के रूप में दृष्टि गोचर है।

आदिकाल से ही नारियों की दशा दयनीय एवं शोचनीय थी | स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकनंद कहते है-"स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है | पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है | 1 विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंतित ,देश एवं समाज के भलाई महिला समाज के तरक्की के बगैर असम्भव बताया है|"

सुशीला टाकभौरे के काव्य संग्रह स्वातिबूंद और खरे मूर्ति तथा यह तुम भी जानू काफी चर्चित रहे हैं उनकी विद्रोही कविता में आक्रोश की ध्वनि सुनाई पड़ती है:

" मां -बाप ने पैदा किया था गूंगा

परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही परिपाटी पर
बैसाखियां चरमराती हैं |
अधिक बोझ से अकुलाकर
विस्कारित मन हुंकारता है
बैसाखियों को तोड़ दूं | "

ऊपर युक्त कविता स्त्री- जीवन की वास्तविकता को दर्शाती है |

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य कार्य एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन की वास्तविक चित्र को खींचा हैं,उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है | जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में "यत्र नार्यस्तु पूज्यतें तत्र रमंते देवता" कहां जाता था आज वहीं अनेक शोषण का शिकार हो रही है |वह कहते हैं:-

"नारी बेचारी है
पूरुष की मारी
तन से क्षदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित्त है |"

प्रस्तुत पंक्ति में कविवर सहाय जी नारी को बेचारी कहकर उसकी दयनीय दशा का वर्णन किया है |जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नहीं पाती | लेकिन वर्तमान में यह स्थिति परिवर्तित नजर आती है | भारत सरकार ने सन 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया | अब नरी अपनी अधिकार को लेकर रहेगी |यही लड़ाई स्त्री -विमर्श या नारी सशक्तिकरण के रूप में परिलक्षित होती है |

हर एक महिला कथाकारों का योगदान :-

हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श का आठवें दशक तक आते-आते एक आंदोलन का रूप ले लिया | आठवें दशक के महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय है - ममता कालिया ,कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल ,मणिक मोहनी ,मृदुला गर्ग ,मुकाला सिन्हा, कुसुम अंचल, इंदू जैन ,सुनीता जैन ,अर्चना वर्मा ,नमिता सिंह आदि के सभी लेखिकाओं का अंकन संजीदगी से किया है | स्त्री की दशाओं पर अनेक समाज सुधारकों ने चिन्ता व्यक्त किया और यथा सम्भव दूर करने का प्रयास भी जिससे नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ | ब्रह्म समाज ,आर्य समाज ,थियोसोफिकल सोसायटी रामकृष्ण मिशन तथा अनेक सरकारी संगठनों ने नारी शिक्षा पर जोर दिया, जिसका सकारात्मक परिणाम आया | वंदना वीथिक के शब्दों में -"नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनके परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी स्वतंत्रता का अभाव था |आज स्थिति परिवर्तित हुई है | आज हर क्षेत्र का द्वारा लड़कियों के लिए खुला है | वे हर जगह प्रवेश पाने लगी हैं- जमीं से आसमां तक -पृथ्वी से चांद तक (कल्पना चावला ,सुनीता विलियम) उनकी पहुंच है |"

आज स्त्री समाज की सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है | राजनीतिक हो या सामाजिक आर्थिक हो या संस्कृत उसके बाद भी यह लड़ाई क्यों ? लेकिन सवाल तो यह है कि वह पुरुष की भांति स्वतंत्रता चाहती है | इसलिए पितृसत्ता का विरोध कर परम्परिक बेड़ियों को तोड़ना चाहती है |

20 वीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्त्री वादी विचार को पनपने का सुअवसर मिला | भूमंडलीकरण ने अपने तमाम अच्छाइयों एवं बुराइयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित स्त्रियों को घर से बाहर निकलने का अवसर दिया| परिणाम स्वरुप स्त्री अपने वर्जित क्षेत्रो में ठोस दावेदारी की और स्वावलंबन के दिशा में तीव्र प्रयास भी सामने आया |

स्त्री- विमर्श वस्तुत:: स्वाधीनता के बाद की संकल्पना है |स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है| डॉ.संदीप रणभिरकर के शब्दों में -"स्त्री -विमर्श स्त्री के स्वयं की स्थिति के बारे में सोचने और निर्णय करने का विमर्श है| सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतन ने ही स्त्री- विमर्श को जन्म दिया है |"

पितृ सत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा अंधकारमय जीवन जीने को मजबूर किया है |लेकिन आज की नरी चेतनसील है जिसे अच्छे - बुरे का ज्ञान है |इसलिए अब इस व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वच्छंदात्मक जीवन जीने को आतुर दिखाई पड़ती है | नारी अस्तित्व को लेकर अपने-अपने समय पर कई विदद्वानों ने चिंता व्यक्त किया है | तुलसीदास जी ने 'ढोल गवार, शूद्र,पशु ,नारी - सकल ताड़ना के अधिकारी कहकर नारी को प्रताड़ना के पात्र समझा है तो मैथिलीशरण गुप्त जी ने अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ,आंचल में है दूध और आंखों में पानी |कहकर नारी के स्थिति पर चिन्ता व्यक्त किया है | प्रसाद ने नारी "तुम केवल श्रद्धा हो कहां हो" कहां है तो शेक्सपियर ने "दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है "आदि कहकर नरी अस्तित्व को संकीर्ण बनाया है |

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है | क्योंकि छठे शताब्दी के पहले तक सिर्फ लेखको का अधिकार था महिला लेखन को काऊच लेखक कहकर हंसी उड़ाया जाता था | परन्तु अब स्त्री - विमर्श का डंका इसलिए बज रहा है क्योंकि आठवें दशक तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी | उसके बाद भी प्रसिद्ध लेखिका सीमोन द बोउआर के उक्त कथन महिला समाज में परिलक्षित होती है-" स्त्री की स्थिति अधिनता की है |स्त्री सदियों से ढगी गई है और यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल की है तो बस उतनी जितनी पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देनी चाहि | यह त्रासदी उस आधे भाग की है जिसे ,आधी आबादी कहा जाता है |"

नारी मुक्ति से जुड़े अनेक प्रश्न उन प्रश्नों से जुड़ी सामाजिक पारिवारिक एवं आर्थिक बेबसी और उससे उत्पन्न स्त्री की मनः स्थिति का चित्रण अनेक स्तरों पर हुआ है| 60 के दशक और उसके संघर्ष का अधिकांश इतिहास जागरूक होती हुई स्त्री का अपना रचा हुआ इतिहास है| नगरों एवं महानगरों में शिक्षक एवं नवचेतना युक्त स्त्रियों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया था जो समाज के विविध क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता प्रमाणित करने के लिए उत्सुक था |

हिंदी कथा लेखिकाओं ने अपने - अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है| अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती - मित्रों मरजानी मन्नु भंण्डारी - आपका बंटी, चित्रा मुद्गल -आंबा एवं एक जमीन अपनी, ममता कालिया -बेघर, मृदुला गर्ग- कढ गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा - चक एवं अल्म कबूतरी,प्रभा खेतान के छिन्नमस्ता,पद्मा सचदेव के अब न बनेगी देहरी,राजीसेढ का यत्न, मेहरुन्निसा परवेज का अकेला पलश आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है| डॉ ज्योति किरण के शब्दों में - 'इस समाज में जब स्त्रीय अपनी समाज और काबिलीयत जाहिर करती हैं तब वह कुलच्छनी मानी जाती हैं,जब वह खुद विवेक से काम करती है तब मर्यादाहीन समझी जाती है| अपनी इच्छाओं अरमानों के लिए जब वह आत्मविश्वास के साथ लड़तीं है और गैर समझोता वादी बन जाती है,तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है|

निष्कर्ष :-

महिला लेखिकाओं की लड़ाई डॉ ज्योति किरण की उपर्युक्त गद्यांश में देखी जा सकती है |अतः निष्कर्ष कहा जा सकता है की नई आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है पुरुष प्रधान समाज मान मर्यादा के आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा | कभी घर का इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अदंर कैद ही रखा |इन्हीं परंपरागत पित्सत्तात्मक बेड़ियों को लांघने की लड़ाई है स्त्री -विमर्श |

अतः स्पष्ट है कि स्त्री विमर्श साहित्य में चलने वाला एक विमर्श है परंतु इसके पीछे सदियों से पीड़ित स्त्रियों के शोषण और उत्पीड़न की कहानी छिपी है | उनके कई आंदोलन का परिणाम है कि आज कुछ स्त्रियों प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही है | अपने बात रखने में सक्षम रही है परंतु अभी भी समझ में स्त्रियों की भीतर चेतना और जागृति की कमी देखी जा सकती है|

आज स्त्री विमर्श पहले की तरह नहीं रहा बल्कि आज यह भूमंडलीकरण और संचार क्रांति से उत्पन्न हुई नई - नई समस्याओं को लेकर चलता है | स्त्री वादी लेखन का अर्थ केवल स्त्री के संबंध में या स्त्री द्वारा लिखा गया लेखन तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह उन तमाम मुद्दों पर भी बहस करती है जिन पर स्त्री अपनी बातों को प्रकट करती है | स्त्री की भावना, इच्छा ,आकांक्षा जो पुरुषों द्वारा दबाई जा रही हैं उन स्थितियों के खिलाफ स्त्रियों द्वारा संघर्ष भी स्त्रीवादी लेखन के अंतर्गत आता है | समकालीन स्त्री विमर्श का मुद्दा केवल स्त्री जीवन और उस जीवन की समस्याएं हैं | स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य स्त्री की मुक्ति से है | स्त्री पुरुष से मुक्ति नहीं चाहती वह तो केवल उसे व्याख्या और मान सिकला से मुक्ति चाहती है जो उसे प्रताड़ित करती है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 20
2. वहीं - पृष्ठ 20
3. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 82
4. आजकल : पृष्ठ 27
5. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 87
6. आजकल : मार्च 2013 - पृष्ठ 24
7. आजकल : मार्च 2011 - पृष्ठ 25
8. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 61